Sub:- Bus. Eco & Environment 61

For B.Com. S/G/D I ; Date 06-05-2020 (01)

Ques – पूर्ण प्रतियोगिता में मूल्य का निर्धारण किस प्रकार होता है।

Ans → पूर्ण प्रतियोगिता बाजार की वह स्थिति होती है जिसमें एक समान वस्तु के बहुत अधिक क्रेता एवं विक्रेता होते हैं। क्रेता-विक्रेताओं की बड़ी संख्या होने के कारण एक क्रेता तथा एक विक्रेता बाजार कीमत को प्रभावित नहीं कर पाते। पूर्ण प्रतियोगिता की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं:-

प्रो० लेफ्टविच के अनुसार, "पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार स्थिति है जिसमें बहुत-सी फर्में एकसमान वस्तुएँ बेचती हैं और इनमें से किसी भी फर्म की यह स्थिति नहीं होती कि वह बाजार कीमत को प्रभावित कर सके।"

श्रीमती जॉन् रोबिन्सन के अनुसार "जब प्रत्येक उत्पादक की वस्तु की माँग पूर्णतः लोचदार होती है तो वह बाजार पूर्ण प्रतियोगी बाजार कहलाता है।"

पूर्ण प्रतियोगी बाजार की विशेषताएँ

1. क्रेता एवं विक्रेता का अधिक संख्या में होना।
2. समरूप उत्पादन।
3. स्वतंत्र प्रवेश एवं बहिर्गमन।
4. बाजार दशाओं का पूर्ण ज्ञान।
5. साधनों के पूर्ण गतिशीलता।
6. कोई परिवहन लागत नहीं।

स्टोनियर एवं हेग के शब्दों में "पूर्ण प्रतियोगिता की व्याख्या करते समय यह मान लेना सुविधापूर्ण होगा कि सभी उत्पादक एक-दूसरे के बहुत समीप कार्य करते हैं जिसके कारण कोई परिवहन लागतें उत्पन्न नहीं होती।"

(P.T.O.)

Scanned with CamScanner

06-05-2020

पूर्ण प्रतियोगिता का वास्तविक जगत में कोई स्थान नहीं है। यह बाजार संरचना व्यावहारिकता से बहुत दूर है। पूर्ण प्रतियोगिता की शर्तें इसे अव्यावहारिक और अवास्तविक बनाती है :-

(1.) पूर्ण प्रतियोगिता की शर्तों के अनुसार वस्तुएँ एक समान ~~विभेद की दशा~~ उत्पन्न होती है। वस्तुतः फर्में वास्तविक जगत में एकसमान वस्तुएँ नहीं बल्कि निकट स्थानापन्न वस्तुएँ बनाती हैं।
इस प्रकार वास्तविक जीवन में वस्तु विभेद की दशा उत्पन्न होती है।

(2.) क्रेता एवं विक्रेताओं को सदैव बाजार का पूर्ण ज्ञान होना यह आवश्यक नहीं। यह मान्यता भी अव्यावहारिक है।

(3.) 'उत्पत्ति के साधनों का पूर्ण गतिशील होना' यह मान्यता भी पूर्ण प्रतियोगिता को काल्पनिक बनाती है।

(4.) वास्तविक जगत में एक वस्तु के अनेक उत्पादक नहीं होते वरन् थोड़े उत्पादक होते हैं। प्रत्येक उत्पादक वास्तविकता में कीमत प्रभावित कर सकता है।

उपर्युक्त बिन्दुओं के आधार पर पूर्ण प्रतियोगिता को काल्पनिक कहा जा सकता है।

पूर्ण प्रतियोगिता में कीमत-निर्धारण

प्राचीन अर्थशास्त्री किसी वस्तु के मूल्य-निर्धारण के बिन्दु पर एकमत नहीं थे। मूल्य-निर्धारण के सम्बन्ध में दो विचारधाराएँ प्रचलित थी। अल्फ्रेड मार्शल के पूर्व के अर्थशास्त्री इस विवाद को समाप्त नहीं कर पाये कि वस्तु का मूल्य-निर्धारण माँग पक्ष करता है अथवा पूर्ति-पक्ष।

प्रथम विचारधारा के अनुसार, किसी वस्तु का मूल्य उस वस्तु के उत्पादन लागत द्वारा तय किया जाता है। इस विचारधारा के प्रतिपादक डेविड रिकार्डो थे।

दूसरे शब्दों में, रिकार्डो ने वस्तु मूल्य निर्धारण में केवल पूर्ति पक्ष को ही ध्यान में रखा तथा माँग पक्ष की पूर्ण उपेक्षा की। दूसरी विचारधारा के प्रतिपादक जेवन्स, वालरस आदि थे जिन्होंने उपयोगिता के आधार पर वस्तु-मूल्य निर्धारण पर बल दिया है। इन दोनों अर्थशास्त्रियों के अनुसार किसी वस्तु का मूल्य उस वस्तु की सीमान्त उपयोगिता द्वारा निर्धारित एवं नियन्त्रित होता है।

(P.T.O.)

Scanned with CamScanner

जेवन्स - वालरस विचारधारा के अनुसार मांग पक्ष किसी वस्तु का मूल्य निर्धारित करता है।

इस विवाद का हल मार्शल की विचारधारा में पाते हैं। जिन्होंने यह बताया कि किसी वस्तु के मूल्य निर्धारण में मांग तथा पूर्ति पक्ष अकेले भूमिका नहीं निभाते वरन् दोनों पक्षों - मांग तथा पूर्ति के सामूहिक एवं परस्पर सहयोग से ही किसी वस्तु का मूल्य निर्धारित होता है।

मांग एवं पूर्ति पक्षों के परस्पर सहयोग के लिए स्टीगलर एवं हेन्डरसन ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। उनके शब्दों में "इस प्रश्न का बिल्कुल सही उत्तर कि मांग अथवा पूर्ति कीमत को निर्धारित करते हैं: यही है कि दोनों ही कीमत को निर्धारित करते हैं। इनका सापेक्षिक महत्व इस प्रकार देखा जा सकता है कि इनमें एक सक्रिय है और दूसरा निष्क्रिय।

रेखाचित्र द्वारा स्पष्टीकरण

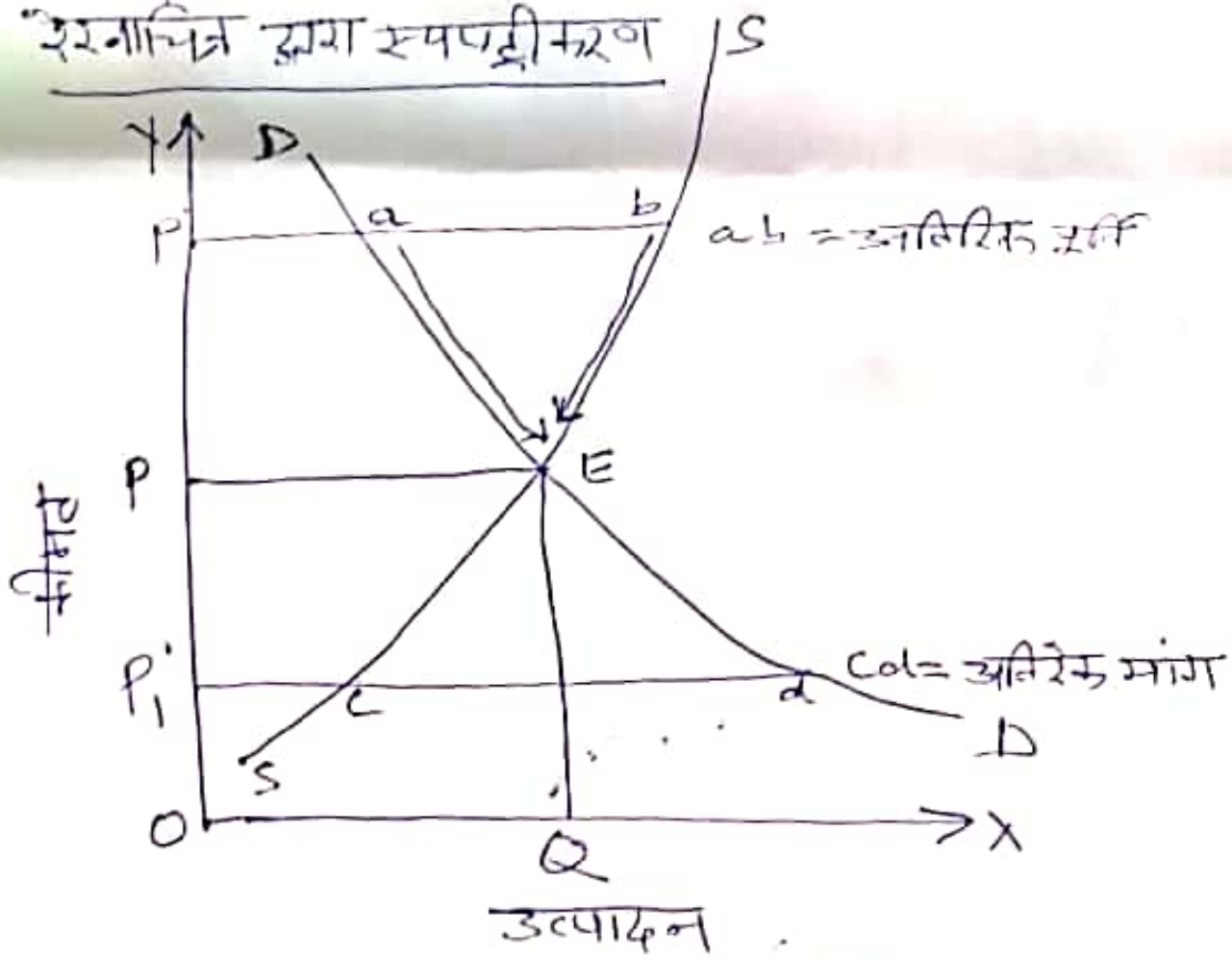

The End

By Dr. S.K. Sharma, R.N.C. Pandaul